एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 11 (नवम्बर, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

लीची के बागों का माहवार प्रबंधन

*प्रवीण कुमार मिश्र, प्रदीप कुमार, प्रवेश कुमार एवं सर्वजीत
विषय वस्तु विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केन्द्र, सोहना, सिद्धार्थनगर,
आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या-224229, उत्तर प्रदेश, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: mishra.nduat@gmail.com

लीची के फल अपने आकर्षक रंग, स्वाद एवं गुणवत्ता के कारण भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में अपना विशिष्ट स्थान बनाए हुए है। लीची उत्पादन में भारत का विश्व में चीन के बाद दूसरा स्थान है। वर्तमान में इसकी गुणवत्ता के कारण घरेलू एवं अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में मांग बढ़ी है। इसकी खेती के लिए एक विशिष्ट जलवायु की आवश्यकता होती है, जो सभी स्थानों पर उपलब्ध नहीं है। अतः लीची की बागवानी मुख्य रूप से उत्तरी बिहार, उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र/पूर्वांचल तथा झारखण्ड के कुछ क्षेत्रों में की जाती है। वर्तमान में इसकी खेती पूरे भारतवर्ष में शीतोष्ण जलवायु को छोड़कर कटिबंधीय एवं उष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में की जा रही है। बिहार में मुजफ्फरपुर जिले की लीची सर्वाधिक गुणवत्ता वाली लीची के रूप में देश–विदेश में प्रसिद्ध हो रही है। लीची के फल में पोषक तत्व एवं विटामिन प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। लीची के फल मुख्यतया ताजे रूप में ही खाए जाते हैं लेकिन इसके फलों से अनेक प्रकार के परिरक्षित उत्पाद जैसे– जैम, स्क्वैश, शर्बत, लीची रसगुल्ला, आर.टी.एस. लीचीनट आदि बनाए जाते हैं। इसलिए लीची के बागानों से अच्छी गुणवत्तायुक्त फलन प्राप्त करने के लिए किसानों को माहवार निम्नलिखित समसामयिक प्रबंधन करने की आवश्यकता है।

जनवरी

- संक्रमित टहनियाँ, और सूखी डालियाँ यदि हों, तो उन्हें काटकर नष्ट कर दें।
- यदि सर्दियों में बारिश न हो या मिट्टी में नमी की कमी हो, तो हल्की सिंचाई करें।
- मंजर निकलने से एक सप्ताह पहले 33ः जिंक सल्फेट (2 ग्राम/लीटर) का छिड़काव करें। जिंक के उपयोग से मादा फूलों की संख्या बढ़ती है।

फरवरी

- कीटों, विशेष रूप से स्टिंक बग और फ्लावर वेबर की संभावित प्रकोप की रोकथाम के उपाय करें निम्नलिखित कीटनाशक संयोजनों में से किसी एक का अनुशंसित मात्रा में दो बार छिड़काव करें। थियाक्लोप्रीड 21.7ः एस.सी. (0.5 मिली./लीटर), फिप्रोनिल 5ः एस.सी. (1.5 मिली./लीटर) या थियोक्लोप्रीड 21.7ः एस.सी. (0.5 मिली./लीटर), प्रोफेनोफास 50ः एस.सी (1.5 मिली./लीटर) या लैम्बडा सायहेलोथ्रीन 5ः ई.सी. (1 मिली./लीटर), डाइमेथोएट 30ः ई.सी (1.5 मिली./लीटर)। पहला छिड़काव 7 से 10 फरवरी के बीच करें और दूसरा छिड़काव 17 से 20 फरवरी के बीच (मंजर उभरने के तुरंत बाद) करें।
- उपरोक्त कीटनाशक संयोजन के साथ दूसरे छिड़काव के समय, एक फफूँदनाशक जैसे थायोफेनेट मिथाइल 75ः डब्ल्यूपी (2 ग्राम/लीटर) या एजोक्सीस्ट्रोबिन 23ः एस.सी (1 मिली./लीटर) का भी उपयोग करें। छिड़काव घोल में स्टीकर (0.4 मिली./लीटर) का उपयोग करें।
- पेड़ों की सक्रिय जड़ क्षेत्र (वृक्ष की छत्रकछाया की बाहरी सीमा से 1 मीटर अंदर की तरफ) में माइक्रोबियल कंसोर्टिया (200 ग्राम ट्राइकोडर्मा, 200 ग्राम माइकोराइजा, 100 ग्राम एजोटोबैक्टर) को 4–5 किग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद (एफवाईएम) के साथ मिलाकर डालें। इसे मिट्टी की सतह पर डालकर अच्छे से मिला दें। उर्वरक के अनुप्रयोग की तरह 'गड़ढा विधि' से इसका अनुप्रयोग न करें।

मार्च

- फूलों के 5–10 खुलने के 10–15 मधुमक्खी के छत्ते प्रति हेक्टेयर रखें ताकि सही परागण और निषेचन हो सके।
- कीटनाशकों का छिड़काव केवल फल सेट होने के बाद और मधुमक्खी के छत्तों को हटाने के बाद ही करें।
- मंजर झुलसा (पैनिकल ब्लाइट) रोग नियंत्रण के लिए थायोफेनेट मिथाइल 75ः डब्ल्यूपी (2 ग्राम/लीटर) या एजोक्सीस्ट्रोबिन 23ः एस.सी (1 मिली./लीटर) या डाइफेनोकोनाजोल 25ः ईसी. (1 मिली./लीटर) का छिड़काव करें।
- फल गिरने से रोकने के लिए प्लैनोफिक्स (2 मिली./4.5 लीटर पानी) या एनएए 20 पीपीएम (20 मिलीग्राम/लीटर) का छिड़काव करें।
- फल सेट होने के बाद हल्की सिंचाई करके मिट्टी की नमी बनाए रखें।

- जैविक खेती के लिए निम्बीसिडिन (300 पीपीएम) या नीम बीज का अर्क (5 मिली./लीटर) या पंचगव्य (30 मिली./लीटर) का छिड़काव कर सकते हैं।

अप्रैल

- फलों के उचित विकास के लिए प्रति पेड़ 500–600 ग्राम यूरिया और 600 ग्राम पोटाश (एमओपी) डालें।
- फल बेधक कीट (बोरर) की रोकथाम के लिए थियाक्लोप्रीड 21.7 एस.सी (0.5 मिली./लीटर) या लैम्ब्डा सायहलोथ्रिन 5: ईसी. (0.5 मिली./लीटर) का छिड़काव करें।
- फल फटने से बचाने के लिए बोरैक्स (4 ग्राम/लीटर) का 15 दिनों के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें।
- फल सेट के 25–30 दिन बाद गैर–बुने हुए (नॉन–वुभेन) सफेद पॉलीप्रोपाइलीन बैग में फल गुच्छों को घुसाकर बांध दें।
- नए बागों में हल्दी, अदरक, ओल, अरबी आदि अंतरफसलें बोई/रोपी जा सकती हैं।

मई

- फल बेधक कीट (बोरर) से फलों को बचाने के लिए नोवालूरॉन 10 ईसी (1.5 मिली./लीटर) या थियाक्लोप्रिड 21.7 एससी (0.6–0.7 मिली./लीटर) या फिप्रोनिल 5 एससी (1.5 मिली./लीटर) का छिड़काव तुड़ाई से 18–20 दिन पहले करें, जब फलों का रंग बदलने (कलर ब्रेक स्टेज) लगे। यह छिड़काव विशेष रूप से प्रतिकूल मौसम जैसे असमय बारिश, फल पकने के समय पूर्वा हवा का चलना या वातावरण में अधिक नमी की स्थिति में आवश्यक है।
- अपेक्षित तुड़ाई से 10–12 दिन पहले इमामेक्टिन बेंजोएट 5: एसजी (0.8 ग्राम/लीटर) या नोवालूरॉन 10 ईसी (1.5 मिली./लीटर) या लैम्ब्डा सायहलोथ्रिन 5: ईसी. (1.0 मिली./लीटर) या फ्लूबेंडियामाइड 39.35: एससी (1.5 मिली./5 लीटर पानी) या स्पाइनोसैड 45: एससी (1.6 मिली./5 लीटर पानी) या स्पिनेटोरम 11.7 एससी (1.0 मिली./लीटर) का छिड़काव करें।
- बाग में मध्य–छत्रक स्प्रिंकलर का उपयोग करें। इसके विकल्प के रूप में, फसल के छत्रक पर देर–दोपहर पानी का छिड़काव करें ताकि धूप से झुलसने और फलों को फटने से बचाया जा सके।
- फल झुलसा रोग से बचाने के लिए थायोफेनेट मिथाइल 75 डब्ल्यूपी (2 ग्राम/लीटर), एजोक्सीस्ट्रोबिन 23: एस.सी (1 मिली./लीटर) या डाइफेनोकोनाजोल 25: ईसी. (1.0 मिली./लीटर) का छिड़काव करें।
- फलों को सही परिपक्वता (रंग, टीएसएस: अम्लता अनुपात 40:1 या टीएसएस 18–20^0 ब्रिक्स से अधिक) पर ही तोड़ें।
- फलों की तुड़ाई सुबह के समय (4–8 बजे सुबह के बीच करें और उन्हें ठंडी जगह पर छाया में रखें, जहाँ छंटाई और ग्रेडिंग की जा सके।
- यदि पास में पैकहाउस उपलब्ध हों, तो उच्च तापमान के प्रभावों से बचने और सही ग्रेडिंग और पैकेजिंग के लिए फलों को वहाँ पहुँचायें।
- फलों को हवादार गत्ते के डिब्बों (वेंटीलेटेड कार्डबोर्ड बॉक्स) या उपयुक्त पैकेजिंग में ठंडा चेन प्रबंधन (कूल चेन मैनेजमेंट) के साथ बिक्री स्थल तक ले जायें।

जून

- फलों की तुड़ाई के तुरंत बाद पेड़ों की हल्की छंटाई करें। कीट–प्रभावित, रोगग्रस्त या सूखी टहनियां, शाखाएं और अनावश्यक अंकुर/शाखाएं हटा दें।
- गिरे हुए/छूटे हुए फलों और पौधों के हिस्सों को हटाकर कीटों ओर रोगजनकों के छिपने के स्थानों को खत्म करें।
- मिट्टी के उचित वायुवहन और सूर्य की रोशनी के संपर्क के लिए हल्की जुताई और अंतर–शस्य कार्य करें।
- प्रति पौधा 60–70 किग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद, 2 किग्रा. नीम या करंज या अरंडी की खल्ली, 1.0–1.2 किग्रा. यूरिया, 3.5–4.0 किग्रा. एसएसपी और 1.0 किग्रा. एमओपी डालें। यह सामग्री वृक्ष के तने से 1–1.5 मीटर दूर, वृत्ताकार खाइयों (20–30 सेमी. चौड़ी और 30 सेमी. गहरी) में डालें।
- उर्वरक डालने से पहले और बाद में हल्की सिंचाई करें, यदि बारिश न हो।
- मिट्टी की उर्वरता सुधारने के लिए ढैंचा, सनई जैसे हरी खाद फसल बोएँ।

जुलाई

- नई टहनियों को कीट, जैसे लीफ माइनर, लीफ रोलर और शूट बोरर से बचाएँ। जरूरत पड़ने पर 15 दिनों के अंतराल पर नोवालूरॉन 10 ईसी (1.5 मिली./लीटर), फिप्रोनिल 5 एससी (2 मिली./लीटर) या स्पाइनोसैड 45: एससी (0.4 मिली./लीटर) का छिड़काव करें।
- 'इन–सीटू माइकोराइजेशन' के लिए मँडुआ/रागी (3–4 किग्रा./एकड़) को माइकोराइजा कल्चर (6–8 किग्रा./एकड़) और सड़ी गोबर की खाद (एफवाईएम) (200–500 किग्रा./एकड़) के साथ बुवाई करें। रागी को फूल आने से पहले काटें जिसे पेड़ों की पलवार/आच्छादन (मल्चिंग) के लिए या चारे के रूप में उपयोग कर सकते हैं।
- इस समय खेत में लीची पौधा लगाने का सही समय है। बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में या जहाँ पानी जमाव की समस्या हो, वहाँ बरसात के मौसम में नई पौध न लगाएँ।

अगस्त

- लीची मकड़ी से प्रभावित पौधों के हिस्से (टहनियां और पत्ते) हटा दें और मिट्टी के अंदर दबा दें। क्लीरफेनापायर 10 ईसी (3 मिली/लीटर) या प्रोपारगाइट 57 ईसी (3 मिली/लीटर) का छिड़काव करके मकड़ी के प्रकोप को कम किया जा सकता है।

- जलभराव से बचाने के लिए उचित जल निकासी की व्यवस्था करें।
- छाल खाने वाले कैटरपिलर (पिल्लू) के जालों को हटा दें। धड़ों पर उनके द्वारा की गई छेदों में पतली तार डालकर पिल्लूओं को मारें और फिर डीजल या पेट्रोल में भिंगोई हुई रूई के टुकड़े डालकर छेद को गीली मिट्टी से बंद कर दें। यदि संक्रमण ज्यादा गंभीर हो, तो छेद में 2–3 बूंद डाईक्लोरोवोस 76 ईसी या क्लोरोपाइरीफास 20 ईसी के घोल में भिगोई हुई रूई अंदर डाल दें और छेद को गीली मिट्टी से बंद कर दें।
- यह समय पुराने लीची बागानों को जीर्णोद्धार करने के लिए सबसे उपयुक्त है।
- माह के अंत तक हरी खाद वाली फसल को मिट्टी में पलट दें।

सितम्बर

- पेड़ों की सक्रिय जड़ क्षेत्र (वृक्ष की छत्रकछाया की बाहरी सीमा से 1 मीटर अंदर की तरफ) में माइक्रोबियल कंसोर्टिया (200 ग्राम ट्राइकोडर्मा. 200 ग्राम माइकोराइजा. 100 ग्राम एजोटोबैक्टर) को 4–5 किग्रा. सड़ी हुई गोबर की खाद (एफवाईएम) के साथ मिलाकर डालें। इसे मिट्टी की सतह पर डालकर अच्छे से मिला दें। उर्वरक के अनुप्रयोग की तरह 'गड़ढा विधि' से इसका अनुप्रयोग न करें।
- 'चाइना' किस्म के नियमित फलने के लिए महीने के अंत तक पौधों के मुख्य तनों पर छाल का वलयीकरण (गर्डलिंग) (2–4 मिमी. चौड़ी 50–75: प्राथमिक शाखाओं पर) अर्थात छल्लाकार छंटाई कर छाल बाहर निकाल दें।
- छाल खाने वाले कैटरपिलर को नियंत्रित करने के लिए अगस्त में बताए गए उपाय को दोबारा से करें।
- आवश्यकतानुसार पत्तियां खाने वाले कीटों को नियंत्रित करने के लिए थियाक्लोप्रिड 21.7 एससी (0.5 मिली. / लीटर) का छिड़काव करें।
- मानसून के अंतिम बारिश के बाद बाग को साफ करें और बीमारियों से बचाने के लिए 1.5 मीटर तक पेड़ के मुख्य तने को बोर्डो पेस्ट (बिना बुझा चूना: कापर सल्फेट: पानी; 500 ग्राम: 500 ग्राम: 50 लीटर) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (2–3 ग्राम / लीटर) से पुताई कर दें।

अक्टूबर

- बाग में मौजूद खरपतवारों को हटाएं और पेड़ों की जड़ों के पास सूखी पत्तियों या घास से पलवार / आच्छादन (मल्चिंग) करें।
- मकड़ी प्रभावित टहनियों को काटकर नष्ट कर दें और क्लोरफेनापायर 10 ईसी (3 मिली / लीटर) या प्रोपारगाइट 57 ईसी (3 मिली / लीटर) का छिड़काव करें। यह पौधों को घुन और लीची लूपर के संक्रमण से भी बचाता है।
- यदि पत्तियों पर कॉपर की कमी के लक्षण दिखें तो कॉपर सल्फेट (2–3 ग्राम / लीटर) का 15 दिनों के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें।

नवंबर

- तनों से निकलने वाले नए कल्लों को हटा दें। छाल खाने वाले कैटरपिलर के संक्रमण की जानकरी हेतु बाग का भ्रमण करते रहें और यदि संक्रमण दिखाई दे तो सर्वप्रथम छाल खाने वाले कीटों के द्वारा उत्सर्जित मल की सफाई करें और उसके नियंत्रण हेतु 2–3 मिली / लीटर डाईक्लोरोवोस 76 ईसी या क्लोरोपाइरीफास 20 ईसी का पूरे तनों पर छिड़काव करें।

दिसंबर

- बाग में मौजूद खरपतवारों की साफ–सफाई करें और बीमारियों से बचाने के लिए 1.5 मीटर तक पेड़ के मुख्य तने को बोर्डो पेस्ट (बिना बुझा चूना: कापर सल्फेट: पानी; 500 ग्राम: 500 ग्राम: 50 लीटर) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (2–3 ग्राम / लीटर) से पुताई कर दें।
- पौधों को ठण्ड एवं पाला से बचाने के लिए तरल सल्फर (3 मिली / लीटर) या सल्फर 80: डब्ल्यू डीजी (2.5 ग्राम / लीटर) का छिड़काव करें।

अन्य समसामयिक सुझाव

- नवंबर माह से लेकर फूल आने एवं फूल खिलने तक बाग की सिंचाई बिल्कुल भी न करें।
- फल के सेट होने एवं इलायची दाने के आकार से लेकर तुड़ाई तक बाग में पर्याप्त नमी का स्तर बनाए रखें।
- बाग में पर्याप्त नमी की दशा में ही खाद एवं उर्वरकों का व्यवहार एवं पर्णीय छिड़काव करें।
- जैव उर्वरकों जैसे ट्राइकोडर्मा, माइकोराइजा, एजोटोबैक्टर, पीएसबी इत्यादि का प्रयोग रासायनिक उर्वरकों के साथ न करें।
- फल गिरने से बचाने के लिए प्रत्येक वर्ष बाग में प्लैनोफिक्स हार्मोन का प्रयोग न करें। इसका उपयोग केवल वैज्ञानिकों की सलाह एवं अनुशंसित दर पर ही करें।
- कभी भी बाग की गहरी जुताई न करें बल्कि बाग की जमीन पर सूखी घास या फसल अवशेषों द्वारा आच्छादन करें।
- जुलाई से अक्टूबर के बीच रासायनिक कीटनाशक का उपयोग तभी करें जब 10 साल से कम उम्र के वृक्षों पर कीट का संक्रमण अत्यधिक हो। अच्छा हो इसके लिए अपने जिले के कृषि विज्ञान केन्द्रों के वैज्ञानिकों / विशेषज्ञों की सलाह अवश्य लें।
- जल में घुलनशील रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों एवं फफूंदीनाशकों के बेहतर उपयोग हेतु घोल बनाते समय स्टीकर को (0.4 मिली / लीटर पानी) या साधारण डिटरजेंट पाउडर 1 चम्मच / 15 लीटर पानी के हिसाब से मिलाएं।